अहसास

एक : बोलो... ए, बी, सी।
सभी : ए, बी, सी।
एक : कहां गई थी ?
सभी : राजा जी के दरबार गई थी।
एक : क्या लेने गई थी ?
सभी : खुशियां लेने गई थी।
एक : क्या खुशियां मिली ?
सभी : नहीं।
एक : क्यों ?
दो : क्योंकि मैं एक औरत हूं
तीन : एक बेटी हूं
चार : एक बहन हूं
पांच : एक पत्नी हूं
छह : एक जननी हूं
एक साथ : पर हम इंसान नहीं हैं, हमें बताया गया है–
एक : ऊंचा मत बोलो
दो : ऊंचा मत हंसो
तीन : ऊंचा मत देखो
एक साथ : बस, नीचा ही नीचा
चार : जीवन तुम्हारा
पांच : व्यवहार तुम्हारा
छह : संसार तुम्हारा
एक : नीची आंखें, नीची नज़रें
दो : दबे चाव, दबी ख्वाहिशें

तीन : खाली अरमान, खाली सोच
चार : अधूरे जज़्बात, अधूरी आशाएं
पांच : कैद कल्पना, कैद उम्मीदें
छह : सूने दिन, सूनी रातें
एक साथ : यह है जीवन हमारा
यह है व्यवहार हमारा
यह है संसार हमारा
एक : पीछे-पीछे जाना
दो : पीछे-पीछे चलना
तीन : कुछ नहीं सोचना
चार : बाहर नहीं देखना
पांच : सिमटकर रहना
छह : घर में बैठना
एक साथ : यह है जीवन हमारा
यह है व्यवहार हमारा
यह है संसार हमारा
एक, दो, तीन : इसका अहसास है हमें
चार, पांच, छह : इसका अहसास करवाना है तुम्हें
एक साथ : यह है नाटक आज का
नाटक आज का
नाटक आज का
(दोहराती हुई स्टेज से एक तरफ चली जाती हैं।)
ए : कमला, ओ कमला, कहां चली गई ?
दो : जाना कहां था, मुन्ने को तैयार कर रही हूं, पर बात क्या है ?
ए : बात क्या होनी है, जुराबें नहीं मिल रहीं।
दो : जहां बूट पड़े हैं, वहां जुराबें भी पड़ी होंगी।
ए : तूने तो पोला सा मुंह बनाकर कह दिया, मेरा यहां वक़्त बर्बाद हो रहा है।
दो : अच्छा, तो आकर ढूंढ देती हूं।
ए : और कमीज़ का बटन भी टूटा पड़ा है।
दो : रात को देख लेना था।
ए : रात को मुझे सपना आना था ?

दो : तो फिर आकर लगा देती हूं।

ए : कब लगाएगी ?

दो : बस, मुन्ने की कंघी कर रही हूं।

ए : तू मुन्ने की कंघी कर रही है, इधर अपना कबाड़ा हो रहा है। दफ्तर से लेट करवा देगी।

दो : सुबह जल्दी उठ जाया करो।

ए : सुबह जल्दी ही उठा था, यहां कोई चीज़ मिले भी तो, रुमाल ही नहीं मिल रहा।

दो : अलमारी में से और निकाल लो, कल वाला मैंने धोया है, अभी सूखा नहीं।

ए : बस यही तेरी बुरी आदत है, कितनी बार कहा है कि मेरी चीज़ों को हाथ मत लगाया कर।

दो : अब गंदा रुमाल भी न धोऊं ? वहां दफ्तर में जाकर देखते तो फिर कहते कि ऐसी पत्नी का क्या फायदा जो रुमाल भी नहीं धो सकती।

(ए बड़बड़ाता बाहर चला जाता है।)

एक : हां, पत्नियों के फायदों में यह फायदा आपने आम सुना होगा...

तीन : पत्नी वो जो घर में सबसे पहले उठे।

चार : जब दूसरे सो रहे हों तो वो बैड टी बनाए।

पांच : प्याला लेकर पति को जगाए।

एक : पति नहाने जाए तो तौलिया पकड़ाए।

तीन : दफ्तर जाने तक उसकी हर बात पर गौर करे।

चार : पति को जुराबें नहीं मिल रहीं, जुराबें ढुंढवाए।

तीन : पति को रुमाल नहीं मिल रहा, रुमाल ढुंढवाए।

एक : ये पति कौन है ?

तीन : दफ्तर में नौकरी करता है।

चार : ये पत्नी कौन है ?

तीन : स्कूल में पढ़ाती है, ये भी कमाती है।

एक : पर फिर भी घर के काम से फारिग नहीं, क्यों ?

तीन, चार, पांच : क्योंकि यह औरत है।

एक : हां, मैं एक औरत हूं, घर के सब लोगों की ज़िम्मेदारी मुझ पर है।

दो : यह भी काम पर से आया है, मैं भी काम से आई हूं।

तीन : वह भी थका है, मैं भी थकी हूं।
चार : वह आराम करता है, मैं चाय बनाती हूं।
पांच : उसके दोस्त आते हैं, मैं चाय बनाती हूं।
एक : वे गप्पें लड़ाते हैं।
दो : वह दोस्तों के साथ बाहर जाता है, मैं रोटी बनाती हूं।
तीन : वह घर लेट आता है, मैं इंतज़ार करती हूं।
चार : वह गहरी नींद सोता है, मैं रात भर जागती हूं।
पांच : उसके जगने से पहले मैं बैड टी बनाती हूं।
एक साथ : तो इस तरह चक्कर चलता है
दिन और रात का
सुबह और शाम का
लंबी दास्तान की यह पहली झांकी है
(पीठ घुमाकर स्टिल हो जाती हैं)
एक : मेरा भाई एक लेखक है।
दो : वो कहानियां लिखता है।
तीन : लोगों का दर्द बांटता है।
चार : गूंगों को जुबान देता है।
पांच : पर वह अपनी पत्नी को गूंगी समझता है।
पांच : क्या लिख रहे हो?
ए : एक कहानी लिख रहा हूं।
पांच : किसके बारे में लिख रहे हो?
ए : एक लड़की के बारे में लिख रहा हूं।
छह : किस लड़की के बारे में लिख रहे हो?
ए : वो लड़की बहुत सारे अरमान लेकर ससुराल में जाती है, पर उसके अरमान कुचले जाते हैं।
छह : अरमान क्यों कुचले जाते हैं?
ए : क्योंकि उसका पति उसके अरमान नहीं समझता।
छह : वह उसके अरमान क्यों नहीं समझता?
ए : तू तो पीछे ही पड़ गई।
एक : जिसके अरमान कुचले गए, उसकी कहानी लिखता है, पर पास बैठी लड़की के अरमान नहीं समझता, क्यों?
दो : क्योंकि वह एक औरत है।

तीन : रोटी पकाने वाली।

चार : कपड़े धोने वाली।

पांच : वो उसकी कल्पना की लड़की नहीं है।

तीन : जिसके होंठ गुलाब की पत्तियां हों।

चार : जिसकी जुल्फें काली घटाएं हों।

पांच : जिसकी आंखें नरगिसी हों।

एक : जिसकी हंसी में घंटियां बजती हों।

दो : जिसके शब्दों में संगीत की लय हो।

तीन : पर मैं तो सिर्फ एक औरत हूं। इसीलिए, मेरे लेखक पति को मेरे अरमानों की कद्र नहीं है।

एक साथ : औरत की दास्तान की यह दूसरी झांकी है, पर उठना नहीं, अभी बहुत कुछ बाकी है।

(फिर से पहले वाली पोज़ीशन में स्टिल)

चार : मैं एक पढ़ी-लिखी लड़की हूं। मेरी कहानी सुनो।

पांच : हां, पढ़ी-लिखी लड़की है।

एक : हम सब में से एक, इसकी कहानी हम सबकी कहानी है।

दो : यह उम्र के उस पड़ाव पर है जब मां-बाप को फिक्र होती है कि अब वो अपने घर जाए।

तीन : अब वो घर उसका अपना नहीं है।

पांच : जहां वो जन्मी, वो पली।

छह : जहां वो गुड्डे-गुड़िया के साथ खेली।

एक : जहां वो आज़ादी से हंसी-खेली।

दो : जिसकी दीवारों से उसकी मित्रता है।

तीन : जिसके आंगन में वो नाची-कूदी।

पांच : हां, अब वह घर उसका अपना नहीं है।

छह : उसे किसी दूसरे घर जाना है।

एक : किस घर जाना है ?

दो : पता नहीं किस घर जाना है।

तीन : किस्मत के खेल हैं।

पांच : तक़दीरों के भेद हैं।

एक : आपने नुमाइश शब्द तो सुना ही होगा, जिसे प्रदर्शनी कहते हैं।

दो : नुमाइश होती है साड़ियों की।

तीन : नुमाइश होती है किताबों की।
पांच : नुमाइश होती है चीनी के बर्तनों की।
एक : नुमाइश में हर चीज़ टटोल-टटोल कर देखी जाती हैं।
दो : नुमाइश में हर चीज़ टनका-टनका कर देखी जाती है।
तीन : हर चीज़ जांच-जांच कर देखी जाती है।
पांच : हर चीज़ नापी जाती है, हर चीज़ तोली जाती है।
छह : और हर ग्राहक को छूट है कि...
एक : उसे टटोल-टटोल कर देखे।
दो : टनका-टनका कर देखे।
तीन : जांच-पड़ताल करके देखे।
पांच : नापकर देखे।
छह : तोलकर देखे।
(फिर एक कोने में जाकर सलाह करती हैं।)
दो : मुझे तो भाभी पसंद है।
एक : चुप कर मरजानी, तुझे तो हर चीज़ एकदम पसंद आ जाती है।
तीन : रंग की सांवली है।
दो : भाभी, तेरे से तो गोरी है।
एक : तू चुप कर, पाऊडर चढ़ा रखा है।
दो : तेरे भैया की क्या राय है?
ए : तुम्हारी राय मेरी राय है।
एक : हां, ये है मेरा पुत्तर, जो हमारी राय होगी, वही इसकी होगी।
तीन : पर कद तो देखा नहीं।
दो : लम्बी लगती है।
एक : बैठे हुए क्या पता चलता है?
तीन : उठाकर देखो।
ए : फीता मैं देता हूं।
एक : फीता क्या करना है, मैं वैसे ही देख लूंगी।
(एक, लड़की की ओर आती है, बाकी वहीं खड़े हैं।)
एक : *(बड़ी चालाकी से प्यार जताकर)* देख तो, कितनी प्यारी है, कितनी सुंदर है, उठ तो तुझे मैं आगोश में भर लूं।
(एक लड़की को आगोश में लेती है। दो, तीन और ए का एक्शन इस तरह का है जैसे वे जांच रहे हों कि कद कितना है।)

पांच : और इस तरह कद बगैर फीते के ही नापा गया। सास मेरी गहरे पानियों की तैराक, गोता लगाकर सब ढूंढ लेती है।

(दूसरे कोने में)

दो : कद की तो लंबी है।

तीन : सेंडिल तो देख कितनी ऊंची एड़ी के हैं।

एक : तेरी क्या राय है बेटा?

ए : मेरी क्या राय होनी है?

पांच : बेटे का क्या विचार होना है, उसे तो एक लड़की चाहिए।

(एक, दो, तीन, ए परामर्श के मूक अभिनय में हैं।)

पांच : और इस तरह सिर जोड़ जोड़कर सलाहें की गईं, जैसे किसी पशु मण्डी से गाय-भैंस खरीदते वक़्त की जाती हैं।

एक : उसे बैठाकर देखा गया, उठाकर देखा गया, चलाकर देखा गया, दौड़ाकर देखा गया और सारी जांच-पड़ताल के बाद जब पूछा गया...

पांच : *(एक, दो, तीन और ए को संबोधित)* क्यों बहन जी, फिर क्या सलाह है?

एक : बहन जी, लड़की तो हमें बहुत पसंद है।

पांच : फिर शगुन कब दें?

एक : इतनी जल्दी क्या है? हम जाकर ख़त लिखेंगे।

तीन : एक-दो जगह से और भी रिश्ते आ रहे हैं, सलाह करके बता देंगे।

(एक, दो, तीन, ए जाते हैं।)

पांच : और ग्राहक चले गए। उन्होंने और भी कई जगह माल देखना है।

चार : और इस तरह ग्राहक आते रहे, ग्राहक जाते रहे पर उस लड़की पर क्या बीती जो अपने बाबुल के आंगन में लड़की से बिकने वाली, पसंद की जाने वाली वस्तु में तब्दील हो गई।

(एक, दो, तीन, पांच, छह एक साथ मंच पर आती हैं।)

एक, दो, तीन : और ये थी दास्तान हमारी

दूसरा दृश्य

चार, पांच, छह : पर बहुत कुछ सुनना है अभी बाकी।

एक, दो, तीन : सब कुछ सहकर औरत ने होना है कभी तो बागी।
चार, पांच, छह : दास्तान आगे उस वक़्त की
औरत हो गई जब बागी
औरत हो गई जब बागी
औरत हो गई जब बागी
(ये दोहराती हुई स्टिल हो जाती हैं और कुछ पल बाद...)

एक : हम औरतें हैं, दुनिया की आधी आबादी हमारी है।
दो : समाज के हर काम में हमारी हिस्सेदारी है।
तीन : हम घर का काम करती हैं, मर्द बाहर कमाता है।
चार : हम 14 घंटे काम करती हैं, वह आठ घंटे करता है।
पांच : पर वह मालिक है और हम गुलाम।
एक साथ : ऐसा क्यों?
एक : क्योंकि वह पैसे की शक्ल में तनख्वाह घर लाता है, उसकी कमाई का मोल पैसे में है।
दो : हमें तनख्वाह नहीं मिलती है और हमारा काम गिना नहीं जाता है।
तीन : काम वह भी करता है।
चार : काम हम भी करती हैं।
पांच : तो फिर गुलामी से मुक्ति कब मिलेगी?
एक : यह एक बड़ा सवाल है।
दो : इसका जवाब हमने खोजना है।
तीन : हां, इसका जवाब हमने खोजना है।
चार : ये गुलामी उस वक़्त खत्म होगी जब हम भी वो काम करने लगेंगी, जिसकी समाज में कीमत हो, कद्र हो।
पांच : कीमत हो, कद्र हो।
एक : हां कीमत हो, कद्र हो, जब हम भी बाहर जाकर काम करेंगी।
दो : हमारे काम से भी घर में नकद पैसा आएगा।
तीन : पर क्या इस तरह घर की खुशी कायम रह सकेगी?
चार : शुरू-शुरू में मुश्किल होगी।
पांच : बाद में सब समझ जाएंगे।
एक : अगर नहीं समझे तो समझाना पड़ेगा।
दो : अगर नहीं अहसास, तो करवाना पड़ेगा।

एक साथ : हां हां अहसास करवाना पड़ेगा।
अहसास करवाना पड़ेगा।
करवाना पड़ेगा।
(और पीठ से दीवार बना लेती हैं। एक कोने से दो आती है, दूसरे कोने से ए आता है। दोनों काम पर से आए हैं। हाथ में टिफिन कैरियर हैं।)

दो : मैं भी काम से आई हूं, वह भी काम से आया है।

ए : कमला, अगर चाय मिल जाए... बहुत थक गया हूं।

दो : रमेश, अगर चाय बना लो तो बहुत अच्छा हो, मैं बहुत थक गई हूं।

ए : दिनभर कागज़ों से मगज़मारी की, सिरदर्द हो रहा है।

दो : दिनभर बच्चों ने दिमाग चाटा, सिर भारी हो रहा है।

ए : तू चाय बना दे।

दो : उठकर खुद बना लो।

ए : मुझे स्टोव जलाना नहीं आता।

दो : तुम्हें स्कूटर चलाना आता है ?

ए : हां।

दो : तुम्हें मशीन चलानी आती है ?

ए : हां।

दो : तो फिर स्टोव जलाना भी सीख लो।

ए : यह मेरा काम नहीं है।

दो : माफ करना, तो फिर ये मेरा काम भी नहीं।

ए : *(तल्खी से)* मुझे चाय चाहिए।

दो : वो तो मुझे भी चाहिए।

ए : मैं बाहर जाकर पी आऊंगा।

दो : दरवाज़ा खुला है।
(ए गुस्से से बाहर जाता है।)

दो : वो चला गया, मुझे दुख हुआ कि मैं कैसी पत्नी हूं जो अपने पति को चाय भी नहीं पिला सकी, पर सवाल यह भी है कि घर के काम को बांटा क्यों न जाए ?

एक, तीन, चार, पांच : *(घूमकर)* हां हां बांटा क्यों न जाए ?

एक : यह कहां लिखा है कि अगर मर्द दफ्तर जाए तो जुराबें ज़रूर

पत्नी को ही ढूंढनी हैं।

दो : यह कहां लिखा है कि मर्द के काम पर जाते वक़्त रुमाल पत्नी को ही पकड़ाना है।

तीन : यह कहां लिखा है कि मर्द को घर में सामान बिखेरना है और सफाई पत्नी को ही करनी है।

चार : बदलते वक़्त के साथ मर्द क्यों न बदले ?

एक साथ : हां-हां, मर्द क्यों न बदले
मर्द क्यों न बदले
क्यों न बदले
क्यों न बदले
(कोरस फिर दीवार बन जाता है। एक कोने से रमेश फ्राइंग पैन उठाए आ रहा है, जैसे अंडा फेंट रहा हो।)

दो : कुछ इन्होंने किया, कुछ मैंने किया...

एक : *(लोगों को हंसते देखकर)* आप लोग हंस रहे हो, यह मर्द तुम्हें किचन में काम करता हुआ बुद्धू लग रहा है।

दो : पर अगर यही काम औरत करे तो वो क्यों नहीं बुद्धू ?

तीन : पर वो आपको बुद्धू नहीं लगेगी।

चार : क्योंकि आपके संस्कार इस तरह के बने हुए हैं, जो औरत को सिर्फ चौके में देखने के अभ्यस्त हैं।

पांच : पर अब वक़्त बदल गया है।

एक : और ये संस्कार भी बदलेंगे।

दो : औरत की जगह हमेशा के लिए चूल्हे के सामने नहीं है।

तीन : चूल्हे का काम हाडतोड़ है पर उसकी कीमत कोई नहीं है।

चार : हां हाडतोड़ है पर उसकी कद्र कोई नहीं है।

पांच : अगर दुनिया यह जान गई है कि मज़दूर की लूट क्यों होती है।

एक : तो वह यह भी जान गई है कि औरत की लूट क्यों होती है।

तीन : औरत भी एक मज़दूर है।

चार : उसकी कद्र तभी होगी जब वह सामाजिक कद्रों वाले काम करेगी।
(दो और ए एक्शन कर रहे हैं जैसे वे बाहर जाने की तैयारी कर रहे हों।)

पांच : इसलिए वह घर से निकल पड़ी है।

एक : पर क्या जब वह घर से निकली तो मर्दों ने इस सच्चाई को स्वीकार कर लिया है ?

दो : नहीं, संस्कार बड़ी मुश्किल से मरते हैं।

चार : आदतें बहुत मुश्किल से बदलती हैं।

पांच : मर्दों ने औरत को अय्याशी का साधन, एक तुच्छ वस्तु समझा है।

एक : हमारी नायिका दफ्तर में है।

दो : उसमें एक मर्द भी है।

चार : और मर्द भी घटिया है।

पांच : उसके दोस्त भी घटिया हैं।

एक : ये घटिया मर्द आपको आम तौर पर यूनिवर्सिटी की कैंटीन में लड़कियों को घूरते दिख जाएंगे।

दो : आप पूछोगे वो यूनिवर्सिटी में क्यों हैं, क्या वे विद्यार्थी हैं ?

चार : नहीं, वे समाज के कुछ निठल्ले लोग हैं, खाते-पीते घरों के बिगड़ैल लड़के, अदालतों में पैठ रखने वाले।

पांच : खाली वक़्त बिताने यहां आ जाते हैं।

एक : पर वे घटिया हैं समाज के लिए, बहुत घटिया।

दो : ये घटिया आदमी आपको चौक-चौराहे पर फिकरे कसते मिल जाते हैं।

चार : इस तरह के घटिया आदमी आपको बसों में भी खरमस्ती करते मिल जाते हैं।

पांच : ऐसे घटिया आदमी दफ्तरों में भी मिल जाते हैं।

(ए और बी आकर बैठते हैं।)

ए : सुना है यार, तेरे पास नई स्टेनो आई है।

बी : तुझे किस तरह पता चला ?

ए : अरे हमें खुशबू आ गई।

बी : हां, नई ही आई है।

ए : किस तरह का 'माल' है ?

बी : अच्छा माल है।

ए : दर्शन तो करवा दे।

बी : लो, अभी करते हैं हाज़िर।

(माइक में घंटी बजाता है।)

तीन : यस् सर... कोई डिक्टेशन देनी है ?

ए : यार इसे कहते हैं... इसे तो रब ने खुद डिक्टेशन देकर बनाया है।
बी : अरे जल्दबाजी मत कर।
तीन : जी सर, कोई काम है?
ए : *(खुद से)* अब तो काम ही काम है।
बी : अरे सब्र कर– हां रीटा, आज आपका शाम का क्या कार्यक्रम है?
तीन : क्या मतलब सर?
ए : *(एक तरफ)* बड़ी सख्त बोलती है।
बी : नरम बोलने लग जाएगी, अभी नई है– मेरा मतलब है रीटा, यह मेरा दोस्त है, इसकी बर्थडे पार्टी है।
तीन : अच्छा ये आज के दिन जन्मे थे... हैप्पी बर्थडे टू यू, भाई साहब।
ए : भाई साहब, सारा स्वाद ही खराब कर दिया।
बी : ये चाहते हैं कि आप भी उस पार्टी में शामिल हो जाओ।
तीन : पर मेरे पास तो कोई प्रेज़ेंट नहीं है।
ए : तुम तो खुद प्रेज़ेंट हो मेरी जान।
तीन : नॉनसेंस।
एक : और हमारी नायिका को हर रोज़ ऐसा तजुर्बा होता है।
दो : अब उसने इससे निपटने का तरीका सीख लिया है। वह अपनी सहकर्मियों को बुलाती है।
एक : हमें इस तरह के तजुर्बे हर रोज झेलने पड़ते हैं।
दो : पुरुषप्रधान समाज में हर कुर्सी पर भेड़िए बैठे हैं।
तीन : पर क्या हमें इनसे डर जाना है?
चार : नहीं, हमें इनका मुकाबला क़रना है।
पांच : और मुकाबला भी डटकर करना है।
एक : आज का युग, विज्ञान का युग है।
दो : आज का युग वो युग है–
तीन : जब इंसान पर जिस्मानी नहीं बल्कि दिमागी मेहनत हावी है।
चार : और दिमाग की औरत के पास भी कमी नहीं है।
पांच : अगर वह रसोई में बढ़िया खाना पका सकती है
एक : कारखानों में बढ़िया कारीगर साबित हो सकती है।
दो : अगर वह घर को सुंदर बना सकती है
तीन : तो वह समाज को भी सुंदर बना सकती है।
चार : अगर वह चौके में नई–नई चीज़ें बना सकती है।

पांच : तो लैबोरेट्रीज़ में मुश्किल से मुश्किल तजुर्बे भी कर सकती है।
एक : वह अच्छी डॉक्टर बन सकती है।
दो : अच्छी इंजीनियर बन सकती है।
तीन : आज का युग विज्ञान का युग है।
चार : आज का युग इंसान की बराबरी का युग है।
पांच : आज का युग वो युग है जब फिलॉसफरों के मर्द और औरत की समानता के सपने को साकार करने का ठोस आधार मौजूद है।
एक : आज का युग विज्ञान का युग है।
दो : आज का युग तर्क का युग है।
तीन : आज का युग इंसान का युग है।
चार : आज का युग अहसास का युग है।
सभी : और आज का युग बराबरी का युग है।